बदलती राहें

Gunjan

वर्ष 01, अंक 02
धर्मशाला, सोमवार 09 मार्च, 2015

आरआरटीएस नार्थ-।। में एक माह का ट्रेनिंग प्रोग्राम आयोजित

विशेषज्ञों ने निखारा प्रशिक्षु काउंसलरों का हुनर

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से गुंजन संस्था द्वारा चलाए जा रहे सिद्धबाड़ी स्थित रीजनल रिसोर्स एंड ट्रेनिंग सेंटर नार्थ-।। में एक माह का ट्रेनिंग प्रोग्राम आयोजित किया गया। इसमें हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर व चंडीगढ़ के नशानिवारण केंद्रों में चलाए जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों का प्रतिनिधित्व कर रहे 35 युवा काउंसलरों का हुनर निखारा गया। इस कार्यक्रम में परामर्श से जुड़े विभिन्न विषयों की विस्तार से जानकारी मुहैया करवाई गई। साथ ही प्रतिभागियों ने अपने-अपने राज्य में नशानिवारण से संबंधित कार्यों की स्थिति पर भी चरचा की।

इस दौरान प्रतिभागियों को नशानिवारण केंद्रों की व्यवस्था व गतिविधियों से जुड़े वाली दवाओं व काउंसिलिंग से जुड़े कौशल व तकनीक की जानकारी इंट्रेक्शन, ब्रेनस्टोर्मिंग, मैपिंग टूल्स व पार्टिसिपेटरी शेयरिंग आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में हिमाचल प्रतिनिधित्व रहा। विभाग के धर्मशाला स्थित सरकार द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों भी बताया कि इन योजनाओं का लाभ किस स्थित जिला बाल संरक्षण अधिकारी जानकारी सांझा की। उन्होंने बताया कि ही अपने परिवार और बच्चों को भी संरक्षण से जुड़ी जानकारी देते हुए अहम जानकारी मुहैया करवाई।

जिला शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान सही दिशा में निखारने के लिए पर बात रखी। उन्होंने बताया कि पर्याप्त संवाद और बच्चों के सहयोगी की निर्वाह कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि शैक्षणिक दबाव से निपटने में कारगर जिज्ञासा को भी शांत करने में सहयोग कुमार व ज्योति शर्मा ने भी प्रशिक्षुओं को नेशनल एड्स कट्रोल संगठन नाको द्वारा चलाई जा नशीले पदार्थों के प्रकार, उनके मानसिक, शारीरिक व वर्तमान रणनीति व काउंसलर के योगदान पर प्रशिक्षण दिया।

मापदंड, नशानिवारण से संबंधित सामाजिक मुद्दों सहित इलाज के लिए इस्तेमाल होने दी गई। यह सारी जानकारी पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन, ग्रुप एक्टिविटिज़, गेम्स, ग्रुप के माध्यम से दी गई। यह ट्रेनिंग प्रोग्राम दो फरवरी से तीन मार्च तक प्रदेश के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग का भी जिला कल्याण अधिकारी नरेंद्र सिंह जरियाल ने प्रदेश की विस्तारपूर्वक जानकारी मुहैया करवाई। उन्होंने यह प्रकार प्राप्त किया जा सकता है। विभाग के ही धर्मशाला करतार सिंह धीमान ने बच्चों पर नशे दुष्प्रभावों की नशा के कारण एक व्यक्ति अपने स्वास्थ्य के साथ बूरी तरह प्रभावित करता है। उन्होंने बाल बाल अधिकारों के बारे में प्रतिभागियों को

डाइट के प्रवक्ता निखिल शर्मा ने युवाओं को अभिभावकों की जिम्मेदारियों व उनकी भूमिका अभिभावक किस तरह अनुकुल वातावरण, भूमिका अपनाकर अपनी जिम्मेवारियों का बेहतर अभिभावकों का यह आचरण जहां बच्चों को बनता है, वहीं उनकी प्रयोगात्मक प्रवृत्ति व करता है। इसके अलावा निरंजन कुमार, अजय कार्यक्रम से जुड़ी अहम जानकारी मुहैया करवाई।

रही टेक्निकल युनिट के कार्यक्रम अधिकारी विजय कुमार ने व्यावसायिक प्रभाव, नशे की मौजूदा स्थितियों से निपटने की गुंजन के रिसोर्स पर्सन शकुन मनकोटिया ने प्रभावी संवाद, नेतृत्व क्षमता विकास, प्रभावकारी परारमर्श और परामर्श के माध्यम से उपचार के विभिन्न बिंदुओं के बारे में प्रतिभागियों को अहम जानकारी दी। रिसोर्स पर्सन विमला विश्वप्रेमी ने समाज में नशे की स्थिति, युवाओं में नशे के बढ़ते प्रचलन की धारणाओं व इनके सहयोगी कारकों के बारे में बताया। साथ ही उन्होंने समुदाय को नशे से बचाने के लिए बेहतर जागरूक कार्यक्रमों के विकल्प भी प्रस्तुत किए। प्रशिक्षण कार्यक्रम में समाजसेवी एवं सेवानिवृत्त नगर योजनाकार पीपी रैणी ने युवा और नशे के अंतरसंबंधों से जुड़ी बात रखी। उन्होंने बताया कि युवा सबसे संवेदनशील, मगर ऊर्जावान अवस्था है।

संवेदनशील होने की वजह से नशे की चपेट में आने का खतरा भी इन पर बना रहता है। जब युवा नशे की चपेट में आता है तो उसकी ऊर्जा क्षीण होने लगती है। उन्होंने युवाओं को सही दिशा व रचनात्मक क्रियाओं में लगाने के लिए नशे से दूर रहने की सलाह दी। इसके लिए युवाओं को सृजनात्मक कार्यों में जोड़ने की जरूरत पर बल दिया। गुंजन आर्गेनाइजेशन आफ कम्युनिटी डिवेल्पमेंट के एग्जीक्युटिव डायरेक्टर संदीप परमार ने प्रशिक्षण कार्यक्रम की सफलता पर सभी प्रतिभागियों को बधाई देते हुए इस अवसर पर मौजूद गणमान्य अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रतिभागियों को नशानिवारण से जुड़ी हर जानकारी मुहैया करवाकर, उन्हें इस क्षेत्र में सेवायें देने के लिए अहम भूमिका अदा करेगा।

वहीं प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद प्रशिक्षुओं ने भी अपने-अपने विचार सांझा करते हुए बताया कि यह कार्यक्रम उन्हें एक काउंसलर बनने में अहम भूमिका अदा करेगा। उन्होंने बताया कि इस कार्यक्रम में विशेषज्ञों ने जो जानकारियां व अनुभव उनसे सांझा किए हैं, वे काफी अहम रहे। इस कार्यक्रम में प्रशिक्षण लेने वालों में सुकर्मा शर्मा, अनुजा शर्मा, आरिफ हुसैन, शाजिया खुर्शिद, आसिम-उर-रहमान, पूर्ण चंद, खलिक अहमद डार, मुनीर अहमद भट्ट, निसार अहमद वानी, सानिया मुश्ताक डीन, रौनक-उन-निसा, सामिया-सिद्दिक-मलिक, सय्यद इर्तिफा मुख्तार, नरेश ब्राग्टा, मोनिका देवी, असीम बाग्गल, मंजीत गुलेरिया, संजीव कुमार, अजय कुमार, विनय चौहान व सचिन चौधरी शामिल रहे।

जज्बे से गूंजा जिंदगी जिंदाबाद का नारा

गुंजन संस्था के आउटरिच वर्कर किशन चंद की कहानी

गुजन, सस्था के प्रमुख सदीप जी ने जैसे ही एक व्यक्ति से परिचय कराते हुये कहा कि ये किशन भइया हैं तो उनके काउंसलर ने बड़े सम्मान से उनका अभिवादन किया। दुबला पतला सा वो शख्स पहली मुलाकात में नजरें झुका के मुट्ठी भींचकर बैठा था। खुली आबो-हवा में सुकून से बात करने के लिये काउंसलर और वह कमरे से उठकर कम्युनिटी सेंटर के मैदान में आ गए। इन दोनों ने साथ बैठकर चाय-बिस्किट खाते हुये बातों का सिलसिला शुरू किया। साथ बैठकर बातचीत शुरू हुई तो उसकी बंधी मुट्ठियां धीरे-धीरे खुलने लगीं। फिर वह किताब के पन्नों की तरह अतीत से वर्तमान की यादों की पगडंडी पर चल पड़े। श्रोता और दर्शक बनी काउंसलर उन्हें गौर से सुनती समझती और देखती रही। झुकी पलकें अब उठ चुकी थीं। गौर से देखा तो उन निगाहों में ढेर सारे सवाल थे। व्यवस्थाएं कथित सभ्य इंसानी समाज और सामाजिक आचारण को लेकर दर्द और आक्रोश से भरे स्वर में उन्होंने जब कहा कि 'सरकार अगर हमारे साथ भेदभाव नहीं खत्म कर सकती तो हमें ही खत्म कर दे' ये शब्द हथौड़े की तरह काउंसलर के दिल-ओ-जहन तक चोट पहुंचा गए। वह सोचने पर विवश हो गई कि वे किस इंसानी समाज में रह रहे हैं। जहां एक इंसान भेदभाव करने वाले कथित इंसानों से इस कदर अजीज आ चुका है कि वह जीते जी अपने ही खात्मे की दरख्वास्त लगा रहा है। एचआईवी पॉजीटिव होने का दंश जहां उसे हर पल चुभता है, वही समाज की उपेक्षा उसे सुकून से सोने नहीं देती। हजारो सपने आंखो में भरकर बरसों पहले यह नौजवान पहली बार ट्रेन में सवार होकर मायानगरी मुंबई पहुंचा था। मायानगरी की चमक ने उसकी निगाहों में भी हजारों ख्वाहिशें भर दी थीं।

एड्स से बीस साल की जंग लड़ने वाले बहादुर को श्रद्धांजलि

उन ख्वाहिशों के रास्ते पर बढ़ते और दोस्तों की कुसंगति में पड़कर कब वह जोश में होश खोने लगा, वह जान ही न सका। जब होश आई तो वक्त मुंबई के समुद्र की लहरों की तरह बहुत कुछ बहा ले गया था। मुंबई जाते वक्त आंखों में सपनों की जगह वापसी में अनगिनत आंसू थे, जो आज आक्रोश बनकर हमारे सामने छलक उठे। इन आंसुओं को आंसू बने रहने देना या उम्मीद में बदल देना, यह सब उसकी ओर बढ़ते मदद करने वाले हाथों पर ही निर्भर था। फिर क्या था इस हारते इंसान ने मदद के हाथ मिलते ही होश में जोश की वो छलांग लगाई कि जिंदगी जिंदाबाद का नारा हर ओर गुंजने लगा। उसकी लगन व महनत की तपीश से उसके शरीर में घुसा जानलेवा वायरस भी हार मानता नजर आया। यह है गुंजन संस्था के आउटरिच वर्कर किशन चंद की कहानी। जो हाल ही में एड्स के साथ बीस साल लंबी जंग लड़ने के बाद इस दुनिया से चुपचाप विदा हो गया। अपने पीछे छोड़ गया तो बस जिंदगी जीने का वो जज्बा जिसे हर कोई एक शहीद सैनिक की तरह ही सलाम करने को तैयार हो जाए। जिला कांगड़ा की खुंडियां तहसील के एक गांव से संबंधित किशन चंद वर्ष 2010 में गुंजन संस्था के साथ जुड़े। वे संस्था के प्रोजेक्ट कम्युनिटी सपोर्ट सेंटर में कार्यरत थे। उन्होंने संस्था का नेटवर्क जिंदगी जिंदाबाद शुरू किया और इसके सचिव रहे। एचआईवी पाजीटिव लोगों की काउंसलिंग करना, उनके अधिकारों के मुद्दे सरकार के समक्ष उठाना उनका प्रमुख उद्देश्य रहा। उन्होंने अपने इस नेटवर्क को सफल बनाते हुए इसके साथ 125 एचआईपी पीड़ित लोगों जोड़ा था। साथ ही माता-पिता से बच्चों में एचआईवी संक्रमण रोकने के लिए चलाए गए प्राजेक्ट में भी उनकी सक्रिय और अग्रणी भूमिका रही।

उन्होंने एचआईवी ग्रस्त माताओं की सुरक्षित डिलीवरी के लिए काफी काम किया। उन्होंने डा. राजेंद्र प्रसाद मेडिकल कालेज टांडा में स्थिति कप्युनिटी केयर सेंटर में काम करते हुए एक सेल्फ हेल्प ग्रुप भी बनाया था। इसमें वे सचिव के तौर पर जुड़े हुए थे। इस ग्रुप के जरिये वे लोगों को जीविकोपार्जन के लिए के लिए प्रेरित करते थे। उन्होंने अपना ग्रुप बैंक के साथ लिंक करवाकर एसबीआई ब्रांच टांडा की मदद से एचआईपी प्रभावित लोगों को दवाई, घरेलू खर्च व अन्य जरूरतों के लिए लोन मुहैया करवाने की व्यवस्था करवा रखी थी। साथ ही इन जरूरतमंदों को काम दिलवाने में भी उनका यह ग्रुप अहम भूमिका निभाता था।

किशन चंद वर्ष 1994 में एचआईवी पॉजीटिव हुए थे। वर्ष1998 में उनका इलाज शुरू हुआ। उस समय एचआईवी प्रभावित को अपने इलाज के लिए महंगी दवाएं खुद ही खरीदनी पड़ती थीं। इस कारण उनके पास अफसोस करने का समय नहीं था, उन्होंने एचआईवी को मात देने के लिए अपना काम-काज जारी रखा। उन्होंने अपने गांव आकर पोल्ट्री फार्म शुरू किया। उनमें समाजसेवा का जज्बा ऐसा था कि लोगों ने उन्हें वार्ड पंच चुन कर पंचायती राज संस्था में सेवा के लिए भेजा।

वर्ष 2010 में किशन चंद गुंजन से जुड़े। उन्हें जिंदगी जिंदाबाद नाम से अपनी तरह का एक अलग ही एचआईपी पाजिटिव लोगों का नेटवर्क बनाकर उनमें भी जिंदगी जीने का जज्बा भरने को मुहिम शुरू कर दी। साथ ही गुंजन संस्था के मार्ग दर्शन में उन्होंने इस नेटवर्क को इतना सफल बना दिया कि पंचायत, ब्लाक व सरकारी संस्थानों में उनका नाम किसी परिचय का मोहताज नहीं रहा। उन्होंने लोगों को जगरूक करके उनमें भी हिम्मत भरी। पहले एचआईवी पाजिटिव लोगों को आर्थिक व सामाजिक परेशानियों का सामना करना पड़ता। उनसे जरूरी टेस्ट करवाने तक के पैसे लिए जाते थे। अब उनके प्रयास से टांडा मेडिकल कालेज में ये टेस्ट फ्री हो रहे हैं। इसके अलावा उन्होंने पीएनबी बैंक से सहयोग मांग कर प्रभावित लोगों का जीरो बैलेंस बैंक अकाउंट खुलवाने में भी मदद की। जब टांडा में एंटी रिट्रोवायरल ट्रिटमेंट सेंटर एआरटी नहीं था तो यहां के प्रभावित लोगों को शिमला स्थित एआरटी सेंटर ले जाते थे। लोगों को वहां से दवाई व सहायता दिलवाते थे।

महिला दिवस विशेष

इतिहास के झरोखे से आठ मार्च के मायने

● पहले फरवरी के आखिरी इतवार को होता था महिला दिवस

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस हर वर्ष 8 मार्च को विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के प्रति सम्मान, प्रशंसा और प्यार प्रकट करते हुए महिलाओं के आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक उपलब्धियों के उपलक्ष्य में उत्सव के तौर पर मनाया जाता है। संपूर्ण विश्व की महिलाएं देश, जात-पात, भाषा, राजनीतिक, सांस्कृतिक भेदभाव से परे एकजुट होकर इस दिन को मनाती हैं। अमेरिका में सोशलिस्ट पार्टी के आह्वान पर यह दिवस सबसे पहले 28 फरवरी 1909 को मनाया गया। इसके बाद यह फरवरी के आखिरी इतवार के दिन मनाया जाने लगा। वर्ष 1910 में सोशलिस्ट इंटरनेशनल के कोपेनहेगन के सम्मेलन में इसे अंतरराष्ट्रीय दर्जा दिया गया।

उस समय इसका प्रमुख ध्येय महिलाओं को वोट देने के अधिकार दिलवाना था, क्योंकि उस समय अधिकतर देशों में महिलाओं को वोट देने का अधिकार नहीं था। वर्ष 1911 में ऑस्ट्रिया, डेनमार्क, जर्मनी और स्विट्जरलैंड में लाखों महिलाओं ने रैली निकाली। मताधिकार, सरकारी कार्यकारिणी में जगह, नौकरी में भेदभाव को खत्म करने जैसी कई मुद्दों की मांग इस रैली में की गई। वर्ष 1913-14 में प्रथम विश्व युद्ध के दौरान, रूसी महिलाओं द्वारा पहली बार शांति की स्थापना के लिए फरवरी माह के अंतिम रविवार को महिला दिवस मनाया गया। यूरोप भर में भी युद्ध के खिलाफ प्रदर्शन हुए। वर्ष 1917 तक विश्व युद्ध में रूस के 2 लाख से ज्यादा सैनिक मारे गए। रूसी महिलाओं ने एक बार फिर रोटी और शांति के लिए इस दिन हड़ताल की। हालांकि राजनेता इसके खिलाफ थे, फिर भी महिलाओं ने एक नहीं सुनी और अपना आंदोलन जारी रखा और फलत: रूस के जार को अपनी गद्दी छोड़नी पड़ी और सरकार को महिलाओं को वोट देने के अधिकार की घोषणा करनी पड़ी।उस समय रूस में जुलियन कैलेंडर चलता था और बाकी दुनिया में ग्रेगेरियन कैलेंडर। इन दोनों की तारीखों में कुछ अंतर है।

जुलियन कैलेंडर के मुताबिक 1917 की फरवरी का आखरी इतवार 23 फरवरी को था, जबकि ग्रेगेरियन कैलेंडर के अनुसार उस दिन 8 मार्च थी। इस समय पूरी दुनिया में (यहां तक रूस में भी) ग्रेगेरियन कैलैंडर चलता है। इतिहास के अनुसार समानाधिकार की यह लड़ाई आम महिलाओं द्वारा शुरू की गई थी। प्राचीन ग्रीस में लीसिसट्राटा नाम की एक महिला ने फ्रेंच क्रांति के दौरान युद्ध समाप्ति की मांग रखते हुए इस आंदोलन की शुरुआत की। फारसी महिलाओं के एक समूह ने वरसेल्स में इस दिन एक मोर्चा निकाला, इस मोर्चे का उद्देश्य युद्ध की वजह से महिलाओं पर बढ़ते हुए अत्याचार को रोकना था। महिला दिवस अब लगभग सभी विकसित, विकासशील देशों में मनाया जाता है।

● कैलेंडर बदलने के साथ बदल गया दिन व महीना

यह दिन महिलाओं को उनकी क्षमता, सामाजिक, राजनैतिक व आर्थिक तरक्की दिलाने व उन महिलाओं को याद करने का दिन है जिन्होंने महिलाओं को उनके अधिकार दिलाने के लिए अथक प्रयास किए। भारत में भी महिला दिवस व्यापक रूप से मनाया जाने लगा है। पूरे देश में इस दिन महिलाओं को समाज में उनके विशेष योगदान के लिए सम्मानित किया जाता है और समारोह आयोजित किए जाते हैं। महिलाओं के लिए काम कर रहे कई संस्थानों द्वारा जैसे अवेक, सेवा, अस्मिता, स्त्रीजन्म जगह-जगह महिलाओं के लिए प्रशिक्षण शिविर लगाए जाते हैं, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। समाज, राजनीति, संगीत, फिल्म, साहित्य, शिक्षा क्षेत्रों में श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए महिलाओं को सम्मानित किया जाता है। कई संस्थाओं द्वारा गरीब महिलाओं को आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है। भारत में एक महिला को शिक्षा का, वोट देने का अधिकार और मौलिक अधिकार प्राप्त हैं। धीरे-धीरे परिस्थितियां बदल रही हैं। भारत में आज महिलाएं आर्मी, एयर फोर्स, पुलिस, आईटी, इंजीनियरिंग, चिकित्सा जैसे क्षेत्र में पुरूषों के कंधे से कंधा मिला कर चल रही हैं। माता-पिता अब बेटे-बेटियों में कोई फर्क नहीं समझते हैं, लेकिन यह सोच समाज के कुछ ही वर्गों तक सीमित है।

सही मायने में महिला दिवस तब ही सार्थक होगा जब विश्व भर में महिलाओं को मानसिक व शारीरिक रूप से संपूर्ण आज़ादी मिलेगी, जहां उन्हें कोई प्रताड़ित नहीं करेगा, जहां उन्हें दहेज के लालच में जिंदा नहीं जलाया जाएगा, जहां कन्या भ्रूण हत्या नहीं की जाएगी, जहां बलात्कार की घटनाएं नहीं होंगी, जहां उसे बेचा नहीं जाएगा। समाज के हर महत्वपूर्ण फैसलों में उनके नजरिए को महत्वपूर्ण समझा जाएगा। तात्पर्य यह है कि उन्हें भी पुरूष के समान एक इंसान समझा जाएगा।

एसिड हमले की पीड़ितों का कैलेंडर लॉन्च

इस बार महिला दिवस पर एक अनोखा कैलेंडर लॉन्च किया गया है। दूसरे कैलेंडर्स की तरह इसकी भी एक थीम है। हर माह के पन्ने पर एक मॉडल पोज देते हुए नजर आ रही है। यह थीम सबसे हटकर है। तीन जाने-माने फोटोग्राफर और फिल्म निर्माता राहुल सहरान, बेल्जियम के पास्कल मन्नार्ट और सुरभि जायसवाल ने मिलकर इस कैलेंडर के लिए फोटोशूट किया है। इस कैलेंडर में एसिड हमले की शिकार उन 11 महिलाओं की तस्वीरें हैं, जिन्होंने इस भयावह प्रताड़ना का सामना कर खुद को दुनिया के लिए मिसाल बनाकर पेश किया। एसिड हमले की पीड़ितों के पुनर्वास के लिए काम कर रहे संगठन स्टॉप एसिड अटैक ने इस कैलेंडर को लॉन्च किया है। संगठन के संस्थापक आशीष शुक्ला का कहना है कि इस दर्दनाक अनुभव से गुजरी महिलाओं का आत्मविश्वास बढ़ाने की यह एक कोशिश है। हमले से मिले जख्मों से पीड़ितएं सोचने लगती हैं कि अब वह समाज में पहले की तरह सम्मान से नहीं जी सकतीं। मगर, यह कैलेंडर उन्हें फिर से समाज के बीच लाने की कोशिश है। इनमें से एक है लुधियाना की रूपा। उन्हें इस कैलेंडर में फोटोजर्नलिस्ट के रूप में दिखाया गया है। वहीं, डॉली और गीता को एक डॉक्टर और शेफ के रूप में पेश किया गया है। लुधियाना की राजवंत कौर का कहना है कि जिस देश में खुबसूरत और दुबली लड़कियों को शादी के लिए सबसे उचित माना जाता है वहां कोई भी एसिड अटैक से बिगड़े हुए चेहरे को मॉडल के रूप में सोच भी नहीं सकता। संगठन से जुड़ने से पहले वह खुद को एसिड अटैक पीड़ित मानती थी लेकिन अब उसका नजरिया बदल गया है। कैलेंडर पर अपना चेहरा देखना उसके लिए सपने जैसा है। शुक्ला के अनुसार इन कैलेंडर से होने वाली कमाई का उपयोग एसिड अटैक के पीड़ितों के पुनर्वास के लिए किया जाएगा। आशीष के अनुसार हमने फंड रेज करने के लिए एक अभियान भी शुरू किया है और लोगों से अपील करते हैं कि वे उनकी वेबसाइट फंडड्रीम्सइंडिया डॉट कॉम पर जाकर बेल्लो कैलेंडर चुनकर डोनेट करें।

स्टॉप एसिड अटैक संगठन की ओर से लॉन्च कैलेंडर

आरआरटीएस नार्थ– ।। में धूमधाम से मनाया महिला दिवस

गुंजन संस्था के रीजनल रिसोर्स ट्रेनिंग सेंटर सिद्धबाड़ी में महिलाओं की संस्था यात्रा ने महिला दिवस धूमधाम से मनाया। इस अवसर पर संस्था की महिला पदाधिकारियों व सदस्यों सहित अन्य महिलाओं ने भाग लिया। कार्यक्रम की मुख्यातिथि के तौर पर एसबीआई बैंक की एजीएम विनीता शौरी ने शिरकत की। उन्होंने महिलाओं को वित्तीय सहायता व बैंक की विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी। साथ ही महिलाओं की सफलता की चरचा की। कार्यक्रम की अध्यक्षता सफल महिला आदर्श बेदी ने की। उन्होंने बताया कि किस प्रकार उन्होंने कड़ी मेहनत व दृढ़निश्चय के साथ सफलता हासिल की। बेदी ने बताया कि उन्होंने होश संभालते ही एक सफल नारी बनने का संकल्प ले लिया था और पांच हजार रुपये जोड़ कर रख लिए थे। ज्ञात रहे कि आदर्श बेदी दो बड़े स्कूल चला रही हैं। कार्यक्रम में विशेषतौर पर पहुंचीं तपोवन आश्रम की मां परमानंदी ने प्राचीन काल से नारी के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि आदिकाल से ही नारी को समाज में विशेष स्थान व गरीमा प्राप्त है। इस अवसर पर महिलाओं को स्वास्थ्य व कानून संबंधी जानकारी भी दी गई। जोनल अस्पताल धर्मशाला की चिकित्सक डा. रविंद्र कौर ने महिलाओं को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक किया और महिलाओं से जुड़ी बीमारियों से बचाव व निदान के बारे में बताया। वहीं एडवोकेट नितिका शर्मा ने महिलाओं के कानूनी अधिकारों की जानकारी दी। कार्यक्रम की शुरुआत यात्रा की प्रवक्ता अनुराधा ने स्वागत भाषण से की। संस्था की सदस्य कांति सूद ने सरस्वति वंदना की प्रस्तुति दी। प्रीति कार्की सूद के दल ने आकर्षक नृत्य प्रस्तुति दी। संस्था की सदस्य प्रियंका ने कार्यक्रम के समापन पर सभी का धन्यवाद व्यक्त किया। इस अवसर पर राका कौल, उपासना, मुनीषा, अदिति गुलेरी, सरिता, मीनू, नैंसी सहित गुंजन संस्था की दीपिका परमार व सुमेधा उपस्थित रहीं।

आई॰ ई॰ सी॰ मैटिरियल डवेलप्मेंट पोस्टर श्रृंखला

सत्यमेव जयते
Ministry of Social Justice & Empowerment

Gunjan
Organisation for Community Development

Gunjan Organisation for Community Development
Regional Resource & Training Centre
Tapovan Road, Tehsil-Dharamshala, Distt. Kangra (H.P.)-176057
Phone: 91-1892-235315, 208255, 9459082624
Email: rrtcnorth.hp@gmail.com, gocd.hp@gmail.com
website: www.gunjanindia.org

INSTITUTE OF SOCIAL DEFENCE NISD NATIONAL